The Death of Jesus
The Fatawh of Al-Azhar and other views

وفاتِ مسیح علیہ السلام
الازہر کا فتوی اور دیگر علماء کرام کی آرا

हज़रत ईसा अ०स० की मृत्यु

मिस्र के अल-अज़हर का 'फ़तवा'
और
(मुस्लिम-जगत् के श्रेष्ठ विद्वानों के प्रकाशित मत)

संपादक व अनुवादक
डॉ. ख़ुर्शीद आलम तारीन

2001 AD

अहमदिय्या अंजुमन इशाअते इस्लाम (लाहौर) भारत
क़लमदान पुरा ,श्रीनगर ,कश्मीर
पिन. 190002

www.aaiil.org

अहमदिय्या सम्प्रदाय के संस्थापक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब[रअ] की घोषणा

"वह व्यक्ति *लानती* है जो हज़रत पैग़म्बरश्री (मुहम्मद)[सल्ल] के सिवा, उन के बाद , किसी और को *नबी* विश्वास करता है ,और उन की *ख़तमे नबूवत* को तौड़ता है।"

(अख़बार *'अल–हकम'* ,क़ादियान ,10जून 1905 ई. ,पृ. 2)

© कॉपीराइट सर्वाधिकार 2001

अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम (लाहौर) हिन्द
क़लमदान पुरा ,श्रीनगर ,कश्मीर — 19002

अहमदिय्या अंजुमन इशाअते इस्लाम — इस अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी प्रचार केन्द्र की स्थापना 1914 ई. में लाहौर में हुई। इस महा प्रचार केन्द्र के नींवदाता हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब[अस] के वरिष्ठ शिष्य थे। इस प्रचार केन्द्र का एकमात्र उद्देश्य इस्लाम की वह उदार, सहिष्णु और शांतिप्रिय छवि पुनः दुनिया के सामने रखना है ,जिस का सहज चित्रण कुर्आन शरीफ़ और हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मद[सल्ल] के परमशुभ चरित्र में विद्यमान है। इस संस्था ने अब तक संसार की अनेक प्रमुख भाषाओं में इस्लाम पर अति विपुल साहित्य प्रकाशित किया है ,जो सर्वत्र अपार श्लाघा और ख्याति प्राप्त कर चुका है।

प्रथम हिन्दी संस्करण : 2001 ई.

الحمد لله رب العلمين ﴿٢﴾ الرحمن

الرحيم ﴿٣﴾ ملك يوم الدين ﴿٤﴾ اياك نعبد و

اياك نستعين ﴿٥﴾ اهدنا الصراط

المستقيم ﴿٦﴾ صراط الذين انعمت عليهم ۵ غير

المغضوب عليهم ولا الضالين ﴿٧﴾

हमारे कुछ अन्य ख्यातिप्राप्त प्रकाशन

कुर्आन शरीफ़ की अंग्रेज़ी टीका

♦ "मौलाना मुहम्मद अली साहिब ने कुर्आन शरीफ़ का अंग्रजी में अनुवाद करके इस्लाम की जो महत्त्वपूर्ण सेवा की है उस की महत्ता को स्वीकार न करना मानो सूरज की रोशनी से इन्कार करना है। इस अनुवाद द्वारा न सिर्फ हज़ारों ग़ैरमुस्लिमों ने इस्लाम के शीतल आँचल में शरण ली बल्कि हज़ारों मुसलमान भी इस्लाम के और अधिक निकट आगए। जहाँ तक मेरा अपना संबंध है मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ कि यह अनुवाद गिनती की उन चन्द किताबों में से है जो चौदाह पंद्राह साल पहले ,जब मैं नास्तिकता और अधर्म रूपी अँधाकरों की गहराइयों में भटक रहा था ,मेरे लिए मार्गदीप बन कर आई और मुझे इस्लाम का मार्ग दिखाया।"

(मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी^रह ,कुर्आन शरीफ़ के मशहूर टीकाकार)

♦ "यह कुर्आन शरीफ़ का अंग्रेज़ी भाषा में प्रमाणिकतम अनुवाद है ,इस में ज्ञानप्रज्ञान से भरे हुए फुटनोट दर्ज हैं।"

(मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" आफ़ ख़िलाफत मूवमेंट)

कुर्आन शरीफ़ की विश्वकोशीय उर्दू तफ़सीर (टीका)

♦ "(मौलाना मुहम्मद अली साहिब^रह का) यह अनुवाद साम्प्रदायिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति से लगभग रिक्त है ,मौलाना साहिब ने बड़ी सावधानी से अनुवादक की भूमिका निभाई है .... उन्हों ने यह अनुवाद बड़ी श्रद्धा और आम जनमत को दृष्टि में रखते हुए किया है।"

(डा. सालिहा अब्दुल्हकीम शरफ उद्दीन की कृति *'कुर्आन हकीम के उर्दू तराजिम'*)

♦ "यह इतनी उच्च कोटि की तफ़सीर है कि शायद उर्दू भाषा का साहित्य रूपी ख़ज़ाना ऐसे कांतिमान रत्न दुर्लभता से भी न निकाल सके।" (मौलाना ज़फर अली खाँ^रह ,संपादक अखबार *'ज़मीनदार'* लाहौर)

हदीस सार (Manual of Hadith)

♦ ".....इस तरह इस के विभिन्न अध्यायों में वे सारी हदीसें (और आयतें) आ गई हैं जिन की एक मुसलमान को अपने दैनिक जीवन में आवश्यकता पड़ सकती है ...... यह इतना बड़ा महाकार्य है जो एक *'अहमदी'* के हाथों सम्पन्न हुआ ,इस श्रेष्ठ कृति की नुकताचीनी या छिद्रान्वेषण कोरी मूर्खता है।" (मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी^रह)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के (मंगलमय) नाम से ,जो अपार दयालु ,सतत कृपालु है।

हज़रत ईसा अ.स. की मृत्यु

मिस्र के *अल–अज़हर* का फ़तवा

और

मुस्लम–जगत् के अन्य श्रेष्ठ विद्वानों के प्रकाशित मत

दो शब्द — संपादक की ओर से

आज कल इस्लाम और ईसाई धर्म के बीच एक जबरदस्त वैचारिक संघर्ष जारी है। बहस का मुद्दा हज़रत ईसा अ.स. का व्यक्तित्व है।

कुर्आन शरीफ़ में ईसाइयों के उस अवैज्ञानिक सिद्धांत का अनेकशः खण्डन मौजूद है जिसके अनतर्गत हज़रत ईसा अ.स. को साक्षात ईश्वर माना जाता है। लेकिन हज़रत ईसा अ.स. के सशरीर आसमान पर उठाये जाने वाली आम मुस्लिम धारणा से ईसाइयों के इस मत को अकारण ही बल मिल जाता है। दुर्भाग्यवश आधुनिक ईसाई धर्म–प्रचारक मुसलमानों की इस प्रचलित मान्यता को स्वयं इस्लाम ही के विरुध एक जबरदस्त हथियार के तोर इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के लिये ईसाई प्रचारकों का यह लेखांश जो अनेक ट्रैकटों और निबंधिकाओं में प्रकाशित होता रहा है :

"कुर्आन शरीफ़ से साफ़ ज़ाहिर कि जिस समय दुश्मनों ने ईसा मसीह को पकड़ना चाहा , आसमान से फ़रिश्ते उतरे और ईसा मसीह को सशरीर उठा कर आसान पर ले गए . ...लेकिन जब मक्का में दुश्मनों ने मुहम्मद साहिब का घेराव किया तो आसमान से कोई फरिश्ता उन को बचाने

नहीं आया और न ही उन्हें आसमान पर उठाया गया। क्या यह ज़मीन व आसमान का अन्तर नहीं ? अन्य पैग़म्बरों को भी अगर उनके दुश्मनों से बचाया है तो इसी धरती पर। ईसा मसीह का विशेष रूप से आसमानी संरक्षण इस बात की स्पष्ट दलील है कि वो अन्य सभी नबियों और पैग़म्बरों में अनुपम और श्रेष्ठतम हैं।

" ईसा मसीह का आज तक सशरीर आसमान पर रहना और भौतिक शारीर की सुलभ आवश्यक्ताओं के बावजूद खानपान से विरक्त होना , भौतिक शरीर के रहते हुए भी परमात्मा के गुण *—अल्–आन कमा कान (=एक ही दशा पर स्थिर रहने वाला)* का धारक हो जाना —ईसा मसीह की ये विशेषताएं इस्लामी मान्यताओं का अभिन्न अंग हैं। इसके विपरीत कुर्आन शरीफ़ में संपूर्ण मानव जाति के बारे में आता है :

فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ

"तुम इसी (धरती) पर जीयो गे ,और इसी में मरो गे , और इसी से निकाले जाओ गे" (7 : 25)।

.... यदि कोई मनुष्य कहला कर भी आसमान पर (बिना खानपान) ज़िन्दा रह सके तो मानना पड़ेगा कि उस की मनुष्यता संपूर्ण मानव जाति से निराली है। फिर समस्त पैग़म्बरों और नबियों के बारे में लिखा है :

وَمَا جَعَلْنَـٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُونَ ٱلطَّعَامَ وَمَا كَانُوا۟ خَـٰلِدِينَ

"हम ने उन के शरीर ऐसे नहीं बनाये कि खानपान के बिना ही हमेशा जीवित रह सकें" (21 : 8)।

अब जो कोई बिना खानपान भौतिक शरीर लेकर ज़िन्दा रह सके वह अवश्य अन्य सभी नबियों से निराला और श्रेष्ठतम है .... ईसा मसीह जो लगभग दो हज़ार वर्ष से बिना कुछ खाए पिये जिन्दा है उस को उन पैग़म्बरों और नबियों में शुमार नहीं किया जा सकता जिन के जीवन का दारोमदार खानपान पर है। अब चूंकि मुहम्मद साहिब इन सब गुणों से

वंचित हैं तो क्या यह साफ़ ज़ाहिर नहीं कि ईसा मसीह उन से श्रेष्ठ और कई दर्जे उत्तम हैं ?"

परन्तु जब हम पवित्र कुर्आन का अध्ययन करते हैं ,तो हमें साफ ज्ञात होता है ,कि हज़रत ईसा[अ.स.] भी अन्य सभी पैग़म्बरों की भांति अपनी स्वभाविक मौत मर चुके हैं। हज़रत ईसा[अ.स.] की स्वभाविक मृत्यु की घोषणा वर्तमान ईसाई मत के लिये अति घातक है। क्योंकि ईसाइयों का विश्वास है कि ईसा मसीह ने सलीब पर जान देकर हम सब के पाप अपने सिर लेलिये थे। अतः ईसा मसीह के इस कर्म पर विश्वास लाने मात्र से ही हम पापमुक्त हो जाते हैं। अब यदि यह साबित हो जाए कि ईसा मसीह ने सलीब पर प्राण त्यागे ही नहीं तो वर्तमान ईसाई धर्म का अस्तित्व आप से आप शून्य हो कर जाता है।

अहमदिय्या आंदोलन के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी[अ.स.] ने अल्लाह की वाणी *(इलहाम)* के अधीन युक्ति , तर्क और इतिहास के यथासंभव प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि हज़रत ईसा[अ.स.] भी आम इन्सानों की भांति अपनी स्वभाविक मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।

यह जो हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मद[सल्ल.] की *हदीसों* (कथनों) और बाइबिल में हज़रत ईसा[अ.स.] के पुनरागमन की भविष्यवाणियाँ आई हैं ,उन के बारे में हज़रत मिर्ज़ा साहब ने फ़रमाया कि इस तरह की भविष्यवाणियों का अर्थ यही होता है कि अमुक व्यक्ति का पुनरागमन किसी और व्यक्ति के रूप में होगा।[1] यही वजह है कि आने वाले *मसीहा* के प्रसंग में हज़रत

1. इस तथ्य की पुष्टि धर्मसाहित्य द्वारा भी होती है। विश्व के प्राचीनतम धर्म यानि हिन्दू धर्म के श्रेष्ठतम ग्रन्थ भगवद्गीता के अनुसार श्री कृष्ण अनेक बार इस धरती पर प्रकट हो चुके हैं। तो क्या हर बार उनका व्यक्तित्व एक ही था ? महा पुरुषों के पुनरागम में सिर्फ उन की दिव्य शक्तियों और सद्गुणों का देश और काल के अनुरूप पुनरप्रदर्शन होता है ,उन के शरीरों का नहीं। बाइबिल में *'मसीहा'* के आगमन से पहले हजरत *एलियाह* के पुनरागमन की भविष्यवाणी है। जब हज़रत ईसा[अ.स.] से इस विषय में पूछा गया कि यदि आप ही सच्चे मसीहा हैं तो फिर वह *एलियाह* कहां है जिस को मसीहा से पहले आना था ? हज़रत ईसा[अ.स.] ने उत्तर दिया कि हज़रत *यहय्या* [अ.स.] (=यूहन्ना बपतिस्मादाता) वह प्रतिज्ञात (Promised) *एलियाह* है , तुम चाहे इस तथ्य को मानो या न मानो (देखो *मत्ती* 11:13–14 व 17:9–12)।

पैग़म्बरश्री मुहम्मदसल्ल.ने उसे اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ *इमामुकुम मिन्कुम* (देखो *बुखारी व मुस्लिम*) या فَاَمَّكُمْ مِنْكُمْ *फ़अम्मकुम मिन्कुम* (देखो *मुस्लिम*) कह कर पुकारा है , यानि *वह मुसलमानों में से उनका इमाम होगा कहीं बाहर से नहीं आयेगा*। इसके अतिरिक्त ***हदीस*** के प्रमाणिकतम ग्रन्थ ***बुख़ारी शरीफ़*** में हज़रत ईसा मसीहअ.सका हुलिया यों प्रतिपादित हुआ है "فَاَمَّا عِيْسٰى فَاَحْمَرُ جَعْدٌ" *"उस का रंग सुर्ख़ और केश घुँघराले थे"* (जिल्द 2 ,पृ.158) , जबकि उसी स्थल पर आने वाले ईसा के बारे में स्पष्ट लिखा है कि رَجُلٌ اٰدَمُ كَاَحْسَنِ مَايُرٰى مِنْ اُدْمِ الرِّجَالِ تَضْرِبُ لِمَتُّهٗ *"उसका रंग गेहुँआ ,पुरुषों में सुन्दर , और वह सीधे केशों वाला है।"* इस से साफ ज़ाहिर है कि आने वाला ईसा और पूर्वकालीन ईसा मसीह एक व्यक्तित्व नहीं ,बल्कि दो अलग अलग व्यक्तित्व हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहब को *इलहाम* द्वारा यह भी बताया गया कि आने वाले *प्रतिज्ञात* ***(promised)*** *मसीहा* आप ही हैं।

इस घोषणा ने सर्वत्र एक तीव्र प्ररोध को जन्म दिया। मुसलमान उलमा का अधिकांश हज़रत मिर्ज़ा साहब के विरुद्ध आग उगलने लगा। हर दिशा से गाली–गलौच होने लगी। आपको खुले आम *मुर्तद* (=इस्लामत्यागी,apostate) करार दिया गया। जगह जगह से आप के खिलाफ़ *कुफ्र* के *फ़तवे* जारी होने लगे।

पर ऐसा प्रतीत होता है कि अर्ध शताब्दी से अधिक बीत जाने के पश्चात् अब मुस्लिम–जगत् को हज़रत मि र्ज़ा साहब के दावों की गंभीरता का अहसास हाने लगा है। हज़रत ईसाअ.स.की मृत्यु के बारे में उलमा अब साधारणतया हज़रत मिर्ज़ा साहब के मत को ही अंगीकार करने लग गए हैं। यह निश्चय ही एक स्वस्थ चिन्ह है ,जिस को निस्संकोच हज़रत मिर्ज़ा साहब के दावे की सत्यता के प्रतिग्रहण की ओर प्रारंभिक कदम कहा जा सकता है।

हज़रत मिर्ज़ा साहब का दावा और दृष्टिकोण एकदम साफ और बोधगम्य है। हज़रत ईसाअ.समृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। उधर उनके पुनरागमन संबंधी भविष्यवाणियां भी इतनी बेशुमार हैं कि उनकी विश्वसनीयता को झुठलाना संभव नहीं। कारण ,मुस्लिम विद्वानों ने हदीसों की विश्वसनीयता

परखने के जितने भी नियम बनाये हैं ये भविष्यवाणियां उन सब पर खरी उतरती हैं। इसके अतिरिक्त इन पुनरागमन संबंधी भविष्यवाणियों के साथ और बहुत सारी भविष्यवाणियां जुड़ी हुई हैं ,जैसे *दज्जाल* (Anti-Christ) , और *याजूज* व *माजूज* (Gog and Magog) का प्रकटन , इस्लाम का पतन और फिर अन्तिम सर्वविजय। ये हदीसें एक दूसरे के साथ कुछ ऐसे गुत्थी हुई हैं कि किसी एक का इन्कार मुम्किन ही नहीं —पूरे हदीस समूह को ही छोड़ना पड़ता है। और इस समूह को अविश्वसनीय ठहराना मानो संपूर्ण हदीस साहित्य की विश्वसनीयता का परित्याग है।

अब यदि ये हदीसें सही हैं , जैसा कि वो हैं , तो प्रश्न यह है कि हज़रत ईसा[अ.स.]मुर्दों में से जिन्दा हो कर इस दुनिया में कैसे वापस आयें गे ? क्योंकि कुर्आन और हदीस की स्थायी शिक्षानुसार मुर्दे पुनः जीवित हो इस संसार में वापस लौटा नहीं करते। कुर्आन शरीफ़ में साफ़ आया है कि :

وَحَرَامٌ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ

" जो लोग मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं वह लौट कर इस दुनिया में नहीं आते"(21 : 95)। इस नियम को अनयत्र भी प्रतिपादित किया गया है (देखो कुर्आन शरीफ़ 23 : 100 , 39 : 42)। इसी प्रकार हदीस साहित्य में एक घटना का उल्लेख मिलता है जिसको विचाराधीन आयतों की व्याख्या कहा जा सकता है :

> *" अब्दुल्लाह के पुत्र जाबिर[रज़] कहते हैं ,मुझे हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल] मिले और फ़रमाया : हे जाबिर क्या वजह है कि मैं तुझे चिन्तित पाता हूँ ? मैं ने निवेदन किया : हे अल्लाह के रसूल ! मेरे पिताश्री धर्मयुद्ध में शहीद हो गए और पीछे एक बड़ा परिवार तथा कर्ज़ा छोड़ गए। फ़रमाया ,क्या में तुझे शुभसमाचार दूँ कि तेरे पिता को अल्लाह के यहाँ क्या मामला पेश आया। निवेदन किया : सुनाइए — (यहां इस लम्बी हदीस का एक टुकड़ा छोड़ दिया गया है) .... अल्लाह ने (जाबिर के पिता से) कहा : हे मेरे बन्दे तू मेरे सामने कोई इच्छा प्रकट कर कि मैं तुझे दूँ। उस ने निवेदन किया : मेरे रब ! मुझे पुनः जीवित कर दे कि मैं दुबारा तेरे मार्ग में मारा जाऊँ। सर्वोच्च रब ने फ़रमाया: यह मैं पहले वचन दे चुका हूँ कि (जो मृत्यु को प्राप्त हो जाएं गे) वह*

पुनः लौट कर (उस दुनिया में) नहीं जाएं गे"

(*इब्न माजा* 24 : 15)

यह हदीस भी इस बात का कतई फैसला करती है कि मुरदा कभी इस दुनिया मैं लौट कर नहीं आ सकता।

कुर्आन व हदीस के इस परिदृश्य में हज़रत मिर्ज़ा साहब वाला एकमात्र विकल्प ही यथोचित एवं धर्मसंगत प्रतीत होता है। वह यह कि मसीहा का पुनरागमन किसी ऐसे *मुजद्दिद* (=*मुस्लिम पुनरुद्धारक*) का आविर्भाव है जिसको हज़रत ईसा[अ.स.] की शक्ति ,स्वभाव और सद्‌गुणों से युक्त किया गया हो। अल्लामा सर मुहम्मद इक़बाल[र.अ.] ने भी इसे बुद्धिसंगत माना है , वे लिखते हैं :

"जहां तक मैं ने इस आनदोलन के उद्देश्य को समझा है , अहमदियों का यह विश्वास है कि हज़रत मसीह[अ.स.] की मौत एक साधारण मरणशील प्राणी की मौत थी और मसीह का पुनरागमन एक ऐसे व्यक्ति का आगमन है जो रूहानी तौर पर उसके सदृश्य है। इस मत के कारण इस आनदोलन पर एक तरह से प्रज्ञाबुद्धि का रंग चढ़ जाता है।"

(अल्लामा इक़बाल का पैग़ाम मिल्लते इस्लामिया के नाम , पृ. 22 व 23)

इसी वास्तविकता को एक बार *जमीअत उलमा–ए–हिन्द* (=*मुस्लिम उलमा की अखिल भारतीय परिषद्*) के पूर्व अध्यक्ष मौलाना किफ़ायत उल्लाह साहिब दहलवी[र.अ.] ने भी स्वकारा है। उन्हों ने एक अहमदी द्विवान की दलीलें सुन कर फ़रमाया था :

" अगर इस्राईली मसीह मर गया है तो फिर (मसीह के पुनरागमन संबंधी) सही हदीसों की वही व्याख्या उत्तम होगी जो माननीय मिर्ज़ा साहिब ने की है"

(अखबार "पैग़ामे सुलह" लाहौर , 27 जून 1937 ई.)।

ऐसे ही रूहानी महापुरूष को उपमा की शैली में *इब्ने मरयम* (=*हज़रत मरयम का पुत्र ईसा*) कह देते हैं। जैसे गालिब के इस मशहूर शेअर में :

इब्न–ए–मरयम हुआ करे कोई
मेरे दुख की दवा करे कोई

और यह दिव्य पद हज़रत मिर्ज़ा साहब को स्वयं प्रभु द्वारा प्राप्त हुआ था। हम यहां आपके दावों की सविस्तार चर्चा नहीं कर सकते , इस विषय में रुचि रखने वाले पाठकों से निवेदन है कि वो हज़रत मिर्ज़ा साहब की असल किताबों का स्वयं अध्ययन करें। हम ने यहाँ अपनी विषय–वस्तु को हज़रत ईसा[अ.स.] की मृत्यु तक ही सीमित रखा है। क्योंकि यही वह एकमात्र विषय है जिसको मुस्लिम और ईसाई अधिवक्ताओं के मध्य विशेष महत्त्व प्राप्त है।

अल्–अज़हर (मिस्र) के प्रमुख मुस्लिम *उलमा* का हज़रत ईसा[अ.स.] की मृत्यु के बारे में बाकायदा *फ़तवा* तथा अन्य आधुनिक मुस्लिम महा विद्वानों के मतों को देख कर यही लगता है कि अब मुस्लिम *उलमा* हज़रत मिर्ज़ा साहब के युक्तियुक्त विचारों की गरिमा और प्रमाणिकता को पहचानने लग गए हैं।

इस *फ़तवे* को हम यहां कुछ अन्य मुस्लिम *उलमा* के मतों के संग प्रस्तुत कर रहे हैं — ताकि हमारे मुस्लिम पाठक इन से प्रेरिणा लेकर हज़रत मिर्ज़ा साहब के दावों पर स्वयं चिन्तनमनन करें।

हज़रत ईसा[अ.स.] का *रफ़अ* *(स्वर्गारोहण)*

(मिस्र स्थित अल्–अज़हर महा–विश्वविद्यालय की अधिसभा को श्री अबदुल करीम ख़ाँ का एक पत्र मध्य–पूर्व से प्राप्त हुआ। जिस में पूछा गया है कि —

प्रश्न :

1. क्या अल्लाह की किताब (कुर्आन शरीफ़) और अल्लाह के रसूल[सल्ल] की हदीसों (पवित्र कथनों) के विवरणानुसार हज़रत ईसा[अ.स.] जिन्दा हैं या मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं ?

2. उस मुसलमान के बारे में क्या फ़तवा है जो इस बात को नहीं मानता कि हज़रत ईसा[अ.स.] अब तक (सशरीर) ज़िन्दा हैं ?

3. उस व्यक्ति के बारे में क्या फैसला है जो हज़रत ईसा अ.स. के पुनरागमन का इनकार करता है ? क्या उसे काफ़िर कहा जा सकता है ?

इस प्रश्न को हमारे वरिष्ठ आचार्य शैख़ महमूद शल्तूत (जो आगे चलकर अल्–अज़हर महा–विश्वविद्यालय के रेक्टर बन गए) की सेवा में उत्तर हेतु भेजा गया। उनके फ़तवे को नीचे अक्षरशः दरज किया जाता है)[1] :

हज़रत ईसा अ.स. की मृत्यु और क़ुर्आन शरीफ़

क़ुर्आन शरीफ़ में हज़रत ईसा अ.स. के अन्त संबंधी चर्चा तीन अलग अलग स्थानों पर मिलती है :

1. *सूरः आले इम्रान* में अल्लाह फ़रमाता है :

فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ ٱلْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ قَالَ
ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَٱشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾
رَبَّنَآ ءَامَنَّا بِمَآ أَنزَلْتَ وَٱتَّبَعْنَا ٱلرَّسُولَ فَٱكْتُبْنَا مَعَ ٱلشَّٰهِدِينَ
﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوا۟ وَمَكَرَ ٱللَّهُ ۖ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَٰكِرِينَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ
ٱللَّهُ يَٰعِيسَىٰٓ إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟
وَجَاعِلُ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوكَ فَوْقَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِلَىٰ
يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ ۖ ثُمَّ إِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

---

1. मूल फ़तवा अरबी भाषा में है , जो पहली बार मिस्र के अरबी साप्ताहिक *"अल्–रिसालह"* (13 मई 1942 ई.) के अंक में प्रकाशित हुआ। यही फ़तवा किसी कदर संशोधन के साथ अल्–अज़हर महा–विश्वविद्यालय्र के मासिक जर्नल "अल्–मुजल्लह" के फ़रवरी 1960 ई. के अंक में भी प्रकाशित हुआ। असल फ़तवा में क़ुर्आनी आयतों का हवाला आदि दरज नहीं , लेकिन पाठकगण की सुविधा के लिए इन हवालों को सम्मिलित कर लिया गया है। अहमदिय्या सम्प्रदाय के मुसलमान इस फ़तवा के उर्दू और अंग्रेज़ी अनुवादों को अब तक लाखों की संख्या में मुफ़्त बांट चुके हैं , हिन्दी अनुवाद पहली बार प्रकाशित किया जा रहा है। असल अरबी फ़तवा भी इस पुस्तिका में सम्मिलित है।

अर्थात् ,"फिर जब ईसा ने उनकी ओर से अविश्वास महसूस किया, तो कहा : अल्लाह के मार्ग में मेरे सहायक कौन हैं ? शिष्यों ने उत्तर दिया : हम अल्लाह के (मार्ग में) सहायक हैं। हमें अल्लाह पर पूर्ण विश्वास है और तू साक्षी रह कि हम आज्ञाकारी हैं। हे हमारे पालनहार–स्रष्टा ! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने उतारा , और हम ने *रसूल* का अनूसरण किया , सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख। और (यहूदियों ने) योजना बनाई और (इधर) अल्लाह ने भी योजना बनाई , और अल्लाह योजना बनाने वालों में सर्वोत्तम है। जब अल्लाह ने कहा : हे ईसा ! मैं तुझे (स्वभाविक मौत) मारने वाला हूँ ,और तुझे अपनी ओर बुलन्द करने वाला हूँ , और तुझे उन लोगों (के आरोपों) से पाक करने वाला हूँ जो इनकार करते हैं , और जिन लोगों ने तेरा अनुसरण किया उन्हें उन लोगों पर कयामत के दिन तक प्रधानता देने वाला हूँ जिन्हों ने इनकार किया। फिर मेरी ही ओर तुम सब की वापसी है ,तब मैं तुम्हारे बीच उन बातों का फैसला करूँगा जिन के विषय में तुम मतभेद करते थे।" (कुर्आन 3 : 51–55)

2. *सूरः अल्–निसाअ* में अल्लाह फ़रमाता है :

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا ٱلْمَسِيحَ عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ ٱللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا
صَلَبُوهُ وَلَـٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ ٱلَّذِينَ ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ لَفِى شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِۦ
مِنْ عِلْمٍ إِلَّا ٱتِّبَاعَ ٱلظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًۢا ﴿١٥٧﴾ بَل رَّفَعَهُ ٱللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ
ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٨﴾

अर्थात् ,"और उन के इस कथन के कारण कि हम ने मसीह , मरयम के पुत्र ईसा ,अल्लाह के रसूल , को कतल कर दिया , जबकि उन्हों ने न उसे कतल किया और न सूली पर मारा किन्तु वह उनके लिये उस जैसा बना दिया गया , और निस्संदेह वे लोग जिन्हों ने इस बारे में मतभेद किया वे इस संबंध में शंकाग्रस्त हैं ,उनके पास इसका कोई ज्ञान नहीं बस अनुमान के पीछे चलते हैं ,और उन्हों ने उसे निश्चित रूप से कतल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उसको अपने यहां

प्रतिष्ठित किया। और अल्लाह बलवान , तत्त्वदर्शी है।"

(कुर्आन 4 : 157–158)

3. *सूरः अल्–माअिदा* में अल्लाह फ़रमाता है :

وَإِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَـٰعِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ءَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ ٱتَّخِذُونِى وَأُمِّىَ
إِلَـٰهَيْنِ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَـٰنَكَ مَا يَكُونُ لِىٓ أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِى
بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُۥ فَقَدْ عَلِمْتَهُۥ ۚ تَعْلَمُ مَا فِى نَفْسِى وَلَآ أَعْلَمُ مَا فِى
نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّـٰمُ ٱلْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَآ أَمَرْتَنِى بِهِۦٓ أَنِ
ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِى كُنتَ أَنتَ ٱلرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

अर्थात् ,"और जब अल्लाह कहेगा : हे मरयम के पुत्र ईसा ! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माता को अल्लाह के सिवा दो ईश्वर बना लो ? वह कहेगा : तू समस्त त्रुटियों से पाक है ! मुझे कब शोभा देता कि मैं वह कहूँ जिस का मुझे अधिकार नहीं , यदि में ने ऐसा कहा होता तो तुझे इसका अवश्य ज्ञान होता ,तू जानता है जो कुछ मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है। तू ही परोक्ष की बातें जानने वाला है। मैं ने उन से कुछ नहीं कहा किन्तु वही जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा रब और तुम्हारा रब है , और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनके बीच था फिर जब तू ने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उनका रखवाला था, और तू हर चीज़ पर साक्षी है।" (कुर्आन 5 : 116–118)

कुर्आन शरीफ़ के यही तीन स्थल हैं जहां हज़रत ईसा[अ.स.] के अन्त की चर्चा है। *सूरः अल्–माअिदा* की आयत क़यामत के दिन के उस वार्तालाप को प्रतिपादित करती है जब अल्लाह हज़रत ईसा से उस पूजा–अर्चना के विषय में प्रश्न करे गा जो संसार में उनकी तथा उनकी माताश्री की होती है।

जिसका हज़रत ईसा[अ.स.] यही उत्तर देंगे :

हे प्रभुवर ! मैं ने उन्हें वही कुछ कहा जिस का तू ने मुझे आदेश दिया — यही कि एक अल्लाह की उपासना करो जो तुम्हारा भी रब है और मेरा भी रब है। और जब तक मैं उनके बीच मौजूद रहा मैं उनका साक्षी था अलबता मुझे मालूम नहीं कि मेरी मृत्यु के बाद उन्हों ने क्या किया।

توفی "*तवफ़्फ़ा* "शब्द का अर्थ

توفی"*तवफ़्फ़ा* " शब्द कुर्आन शरीफ़ में इतनी अधिकता से *'मृत्यु'* के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है , कि यही अर्थ इसका सर्वोपरि भाव बनकर रह गया है। यह शब्द किसी दूसरे भाव में केवल उसी वक़्त इस्तेमाल होगा जब उस भाव के लिए विशेष संकेत मौजूद हों :

قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ ٱلْمَوْتِ ٱلَّذِى وُكِّلَ بِكُمْ

"कह : मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है तुम्हारे प्राण निकाल लेगा (*यतवफ़्फ़ाकुम*)" (कुर्आन 32 : 11) ,

إِنَّ ٱلَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ أَنفُسِهِمْ

"(रहे) वो लोग जिन के प्राण फ़रिश्ते उस दशा में निकालते हैं (*तवफ़्फ़ाहुम*) जब वे अपनी आत्माओं के प्रति अन्याय कर रहे होते हैं" (कुर्आन 4 : 97) ,

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟

"यदि तू देखे जब फ़रिश्ते काफिरों के प्राण निकालते हैं (*यतवफ़्फ़ा*) " (कुर्आन 8 : 50) ,

إِذَا جَآءَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ

"हमारे भेजे हुए दूत उसके प्राण निकाल लेते हैं (*तवफ़्फ़तु*)" (कुर्आन 6 : 61)

وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ

"और तुम में से कोई ऐसा भी होता है जो मृत्यु को प्राप्त हो जाता है (*युतवफ़्फ़ा*)" (कुर्आन 22 : 5),

حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ

"यहां तक कि उनको मृत्यु ले जाए (*यतवफ़्फ़ाहुन्न*)"
(कुर्आन 4 : 15)

تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ

"मुझे आज्ञाकारी की मौत मार (*तवफ़्फ़नी मुस्लिमा*) और मुझे नेक बन्दों में शामिल कर।" (कुर्आन 12 : 101)

सूरः अल्–माइदा की आयत में प्रयुक्त शब्द ***तवफ़्फ़ैतनी*** का अर्थ वही मृत्यु है जो सब को मालूम है। संदर्भ को दृष्टि में रखा जाए तो समस्त अरबी भाषी इस शब्द का यही और सिर्फ यही अर्थ लें गे। तात्पर्य यह कि यदि इस आयत में हज़रत ईसा[अ.स.] के अन्त को दर्शाने वाली कोई और बात न भी होती तब भी यह कहना अनुचित और गलत था कि हज़रत ईसा[अ.स.] जिन्दा हैं, मरे नहीं।

इस बात की कतई कोई गुंजाइश नहीं कि यहां ***वफ़ात*** शब्द का अर्थ हज़रत ईसा[अ.स.] के आसमान से उतरने के बाद की मृत्यु है — जैसा कि कुछ लोगों की मान्यता है कि हज़रत ईसा[अ.स.] आसमान पर जिन्दा हैं और अन्तिम ज़माना में आसमान से उतरें गे। **विचाराधीन आयत में हज़रत ईसा[अ.स.] के संबंध को उनकी अपनी जाति तक ही सीमित बताया गया है उनका किसी आने वाले अन्तिम ज़माना के लोगों से को संबंध नहीं। वैसे भी अन्तिम ज़माना के लोग तो निश्चय ही हज़रत पैगम्बरश्री मुहम्मद[सल्ल] के अनुयायी होंगे न कि हज़रत ईसा[अ.स.] के।**[1]

---

1. एक और दृष्टि से देखिये, तो भी यह आयत हज़रत ईसा[अ.स.] की मृत्यु को निश्चयात्मक रूप से साबित करती है। क्योंकि इस आयत में ईसाइयों की धारणाओं के बिगड़ने का ज़माना हज़रत ईसा[अ.स.] की मृत्यु उपरांत बताया गया है। और चूंकि वह कुर्आन के अवतरण से पूर्व ही बिगड़ चुकी थीं, इस लिये हज़रत ईसा[अ.स.] की मृत्यु भी कुर्आन के अवतरण से पूर्व हो चुकी थी। ***बुख़ारी*** शरीफ़ में
(शेष अगले पृष्ठ पर)

رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ रफ़अहुल्लाहु इलैहि का अर्थ

सूरः अल्–निसाअ के इस पद (بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ) ***बल् रफ़अहुल्लाहु इलैहि*** (*=बल्कि अल्लाह ने उसको अपने यहां प्रतिष्ठित किया*) — का अर्थ कुछ टीकाकरों ने या यों कहिये कि बहुत सारे टीकाकारों ने यही लिया है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा[अ.स.] को सशरीर आसमान पर उठा लिया था। उनका कहना है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा[अ.स.] की शकल किसी और व्यक्ति पर डाल दी (जिसको यहूदियों ने सलीब पर मार डाला) और हज़रत ईसा[अ.स.] को सशरीर आसाम पर उठा लिया गया। अतः हज़रत ईसा[अ.स.] आसमान पर जिन्दा हैं और वहां से आखरी ज़माना में उतरें गे, और फिर *सुअर का वध और सलीब का खंडन* करें गे। उन की इस मान्यता का आधार यह है :

प्रथमतः, वे कथन जिन में ***दज्जाल*** **(Anti-Christ)** के प्रकटन उपरान्त हज़रत ईसा[अ.स.] के उतरने का उल्लेख है। किन्तु इन कथनों में काफ़ी अन्तर्विरोध है, इनके शब्द और इनका भाव दोनों एक दूसरे का खण्डन करते हैं। इन कथनों में इतनी असमानता है कि समन्वय संभव ही नहीं। इस तथ्य को हदीसवेताओं ने भी स्वीकारा है। इसके अतिरिक्त, इन कथनों का वर्णन वहब बिन मुन्नब्बह और कअब अल्–अहबार ने किया है ये दोनों सजन ***अहले किताब*** यानि यहूदियों में से थे ,जो इस्लाम लाये

हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल] का यह कथन मिलता है ,फ़रमाया :

"जब क़यामत के दिन मेरी उम्मत (=अनुयायी समुदाय) के कुछ व्यक्ति पकड़ कर नरक की ओर ले जाए जायें गे ,और अल्लाह कहे गा : (हे मुहम्मद !) तू नहीं जानता कि इन्हों ने तेरे बाद क्या किया। तब मैं वही बात कहूँ गा जो नेक बन्दे (ईसा[अ.स.]) ने कही थी —'और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनके बीच था फिर जब तू ने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उनका रखवाला था, और तू हर चीज़ पर साक्षी है।"

हमारे पैग़म्बरश्री मुहम्मद[सल्ल] का हज़रत ईसा[अ.स.] के शब्द इस्तेमाल करना साफ़ बताता है कि आप के निकट हज़रत ईसा[अ.स.] की *उम्मत* भी उनकी मृत्यु के बाद बिगड़ी, और इसी प्रकार आपकी *उम्मत* आप की मृत्यु के उपरांत बिगड़े गी।

(संशोधित फ़तवे से)

थे। हदीसवेताओं एवं हदीस–समीक्षकों के निकट उन (के प्रतिवेदन) का स्तर सब को मालूम है।

द्वितीयतः , वह कथन जिस का प्रतिवेदन अबू हुरैरह[रज़] ने किया है , जिस में उन्हों ने हज़रत ईसा[अ.स.] के उतरने की सूचना दी है। यदि इस कथन को सही भी मान लिया जाए तब भी यह अकेली हदीस है। और यह बात इस्लाम के सभी विद्वानों के यहां निर्विवाद है कि इस तरह की अकेली सूचना को न तो किसी मौलिक धारणा का आधार बनाया जा सकता है , और न ही परोक्ष संबंधी घटनाओं के विषय में इस पर भरोसा किया जा सकता है।

तृतीयतः , ***मिअराज*** वाली ***हदीस*** , जिस में कहा गया है कि जब हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल] ऊपर आसमनों की ओर चले गए , तो एक के बाद एक आकाशद्वार खुलते गए , द्वार खुलता तो भीतर प्रवेश करते। आप ने हज़रत ईसा[अ.स.]और उनके मौसेरे भाई हज़रत यहय्या[अ.स.]को दूसरे आसमान पर देखा। इस प्रमाण की कमज़ोरी साबित करने के लिए इतना बता देना ही काफी है कि ***हदीस*** के अनेक वेता यह मत प्रकट कर चुके हैं कि हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल]की पूर्ववर्ती पैग़म्बरों से यह मुलाकात रूहानी थी शारीरिक न थी ।

(देखो فتح البارى '***फ़तह अल्–बारी***' , زادالمعاد '***ज़ाद अल्–मआद***' इत्यादि)।

आश्चर्य की बात तो यह है कि ये लोग विचाराधीन आयत के '***रफ़अ***' (=आरोहण , ऊपर उठना) शब्द की व्याख्या करते समय ***मिअराज*** वाली ***हदीस*** को आधार बनाते हैं , और इस से हज़रत ईसा[अ.स.]का सशरीर आसमान पर उठाया जाना साबित करते हैं। और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हज़रत पैग़म्बरश्री[सल्ल]की हज़रत ईसा[अ.स.]से इस मुलाकात को एक शारीरिक भेंट मानते हैं और प्रमाण में بَل رَّفَعَهُ ٱللَّهُ إِلَيۡهِ '***बल् रफ़अहुल्लाहु इलैहि***' का पद पेश कर देते हैं। फल यह कि जब ये लोग हदीस पेश करते हैं तो अपने काल्पनिक अर्थ की पुष्टि के लिए इस आयत को प्रस्तुत कर देते हैं , और जब आयत की व्याख्या करने लगते हैं तो अपने काल्पनिक अर्थ को सिद्ध करने के लिए इसी हदीस को प्रस्तुत कर देते हैं।

सुरः आल अिमरान में رفع 'रफ़अ' का अर्थ

जब हम ***सूरः आल इमरान*** की आयत إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ ***'इन्नी मुतवुफ़्फ़ीक व राफ़िअूक इलय्य'*** *(मैं तुझे (स्वाभाविक मौत) मारने वाला हूँ ,और तुझे अपनी ओर बुलन्द करने वाला हूँ)* को ***सूरः अल्–निसाअ*** की आयत بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ***'बल् रफ़अहुल्लाहु इलैहि*** *(बल्कि अल्लाह ने उसको अपने यहां प्रतिष्ठित किया)* के साथ मिला कर पढ़ते हैं तो साफ ज्ञात होता है कि पहली आयत में जिस رفع ***रफ़अ*** (=आरोहण , ऊपर उठना) का वचन दिया गया है उसी के पूरा होने का उल्लेख दूसरी आयत में है। पहली आयत में मृत्यु ,رفع ***रफ़अ*** , और काफिरों के मिथ्या आरोपों से दोषमुक्ति के वादे थे। यद्यपि दूसरी आयत में मृत्यु और दोषमुक्ति की चर्चा नहीं , सिर्फ अल्लाह के यहां प्रतिष्ठा पाने का ज़िक्र है। पर दोनों आयतों के समन्वय के लिये ज़रूरी है कि इन सब वादों को यहां भी दृष्टिगत रखा जाए। सो आयत का भावार्थ यह हुआ कि अल्लाह ने हज़रत ईसा[अ.स.] को पहले मृत्यु दी ,और फिर उनका رفع ***रफ़अ*** किया यानि ***उन्हें प्रतिष्ठा प्रदान की***, और उन्हें काफिरों के आरोपों से दोषमुक्त किया।

कुर्आन शरीफ़ के सुप्रसिद्ध टीकाकार *अल्लामा आलूसी* ने आयत إِنِّى مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ ***'इन्नी मुतवुफ़्फ़ीक'*** की जो विभिन्न व्याख्याएं की हैं उन में स्पष्टतम यही है —

> *' मैं तेरा जीवनकाल पूर्ण करूँ गा और तुझे स्वाभाविक मौत मारूँ गा तुझ पर कोई ऐसा व्यक्ति हावी न होगा जो तुझे कतल कर सके या सलीब पर मार सके।'*

आयत مَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ ***मा कतलूहू व मा सलबूहू*** *(=उन्हों ने न उसे कतल किया और न सूली पर मारा)* का सहज भाव भी यही है। अब जिस व्यक्ति का कतल न हुआ हो और न ही उसे सलीब पर खींचा गया हो ,उस के बारे में ज़रूरी नहीं कि उस की मौत का भी इनकार कर दिया जाए। जीवनकाल को पूर्ण कर स्वाभाविक मौत मर जाने का सहज

अर्थ यही हुआ कि हज़रत ईसा[अ.स.] को दुश्मनों की घातक योजनाओं से सुरक्षित रखा गया। ज़ाहिर है कि मरणोपरांत رفع **रफ़अ** का अर्थ इसके अलावा और कुछ नहीं कि अल्लाह ने उनके दर्जे बलंद किये या उन्हें प्रतिष्ठा में ऊँचा किया ,न यह कि उनको सशरीर आसमान पर उठा लिया। विशेषकर जब — وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا *"और तुझे उन लोगों (के आरोपों) से पाक करने वाला हूँ जो इनकार करते हैं"* — वाला पद इसके साथ जुड़ा हुआ हो ,जो यही साबित कर रहा है कि यहां रूहानी सम्मान और प्रतिष्ठा रूपी उच्चता ही अभीष्ट है।

स्वयं कुर्आन शरीफ़ में رفع **रफ़अ** शब्द अनेकशः इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है , जैसे :

فِى بُيُوتٍ أَذِنَ ٱللَّهُ أَن تُرْفَعَ

"उन घरों में जिन के सम्मानजनक आध्यात्मिक उत्थान (तुर्फ़अ) की अल्लाह ने अनुमाति दी है" (कुर्आन 24 : 36) ,

نَرْفَعُ دَرَجَـٰتٍ مَّن نَّشَآءُ

"हम जिस के चाहते हैं दर्जे बुलन्द करते हैं (नर्फ़अु)"
(कुर्आन 6 : 84 , 12 : 76) ,

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾

"और हम ने तेरी चर्चा को तेरे लिये बुलन्द किया (रफ़अना)"
(कुर्आन 94 : 4) ,

وَرَفَعْنَـٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

'और हम ने उसे प्रतिष्ठा के उच्च आसन पर आसीन कर दिया (रफ़अनाहु)" (कुर्आन 19 : 57) ,

يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟

"अल्लाह उन लोगों के दर्जे बुलन्द करेगा (यर्फ़अु) जो ईमान

लाये ......," (कुर्आन 58 : 11) इत्यादि।[1]

फल यह कि आयत ***व राफ़िउक इलय्य*** *(और तुझे अपनी ओर बुलन्द करने वाला हूँ)* और आयत ***बल् रफ़अहुल्लाहु इलैहि*** *(बल्कि अल्लाह ने उसको अपने यहां प्रतिष्ठित किया)* में भी सर्वथा वही भाव अभीष्ट है जो इस तरह के वाक्यों से ज्ञापित होता है :

"अमुक व्यक्ति अपने सर्वोच्च मित्र यनि परमात्मा से जा मिला"

"अल्लाह हमारे साथ है" ,"बलिष्ठ सम्राट यानि परमात्मा के यहां"

इस प्रकार के वाक्यों से अभिप्रेत सिर्फ परमात्मा की शरण अथवा संरक्षण है। समझ में नहीं आता कि शब्द اليه ***इलैहि*** *(प्रभु की ओर)* में टीकाकार गण आसमान कहां से घसीट लाते हैं। **अल्लाह की कसम ! यह कुर्आन शरीफ की सरल एवं सुस्पष्ट वर्णनशैली के प्रति घोर अन्याय है। और यह अन्याय सिर्फ़ उन तथाकथित मान्यताओं , कथाओं और कथनों के आधार पर किया जा रहा है जिन की स्वयं अपनी कोई यथार्थता नहीं , प्रमाणिकता सिद्ध होने की तो बात ही नहीं।**

विचाराधीन आयतों का सही भाव

इस के अतिरिक्त हज़रत ईसा[अ.स.]एक पैग़म्बर मात्र थे , और उनके पहले के सभी पैग़म्बर मत्यु को प्राप्त हो चुके थे। जब हज़रत ईसा[अ.स.]की जाति ने उनका विरोध किया ,तो उन्हों ने भी अन्य पैग़म्बरों की भांति अल्लाह से प्रार्थना की। अल्लाह ने अपनी परम शक्ति और प्रज्ञान से हज़रत ईसा[अ.स.]को बचा लिया और उनके शत्रुओं की कुयोजनाओं को विफल कर दिया। इसी तथ्य को कुर्आन शरीफ़ इन आयतों में प्रतिपादित किया गया है ——*"फिर जब ईसा ने उनकी ओर से अविश्वास महसूस*

---

1. हम स्वयं रोज़ नमाज़ में وارفعني *वर्फ़अिनी* (=हे प्रभुवर ! मेरे दर्जे बुलन्द कर , मुझे प्रतिष्ठत कर) कहते हैं। अल्लाह का एक नाम الرافع *अल्–राफ़िउ* भी है ,जिस का अर्थ समस्त शब्दार्थविज्ञानियों ने यही बताया है कि वह अपने मित्रों और अपने भक्तों को अपना सामीप्य प्रधान कर उनके दर्जे बुलन्द करता है। इन्सान का किसी ऊँची जगह पर चले जान अल्लाह के निकट बुलन्दी नहीं। और फिर परमात्मा कोई शरीर नहीं कि वह किसी उच्च स्थान पर बिराजमान हो। (संशोधित फ़तवे से)

किया , तो कहा : अल्लाह के मार्ग में मेरे सहायक कौन हैं ? .... अन्त तक।" इस आयत में अल्लाह ने साफ़ साफ़ बताया है कि उसकी योजना दुश्मनों की कुयोजना से अति सूक्ष्म और कारगर थी। सो अल्लाह की शरण और संरक्षण के सामने हज़रत ईसा^अ.स.^की जाति की वो सारी कुयोजनाएं विफल हो कर रह गईं जो उन्हों ने उनकी हत्या हेतु बनाई थीं। और आयत — *"जब अल्लाह ने कहा : हे ईसा ! मैं तुझे (स्वाभाविक मौत) मारने वाला हूँ ,और तुझे अपनी ओर बुलन्द करने वाला हूँ "*— में अल्लाह ने यह शुभसूचना दी है कि वह हज़रत ईसा^अ.स.^को उसके दुश्मनों की कुयोजनाओं और षड़न्त्रों से बचा लेगा , दुश्मनों की सारी चालें विफल हो कर कालांतर में समाप्त हो जाएंगी। परिणाम यह कि हज़रत ईसा^अ.स.^ अपना जीवनकाल पूर्ण कर स्वाभाविक मौत मर जाएं गे। उन्हें न तो कतल किया जाएगा और न सलीब पर मारा जाएगा। ***तब*** यानि ***मरणोपरांत*** अल्लाह उन्हें अपने यहां *रफ़अ* दे गा।

यही वे आयतें हैं जिन में हज़रत ईसा^अ.स.^और उनकी जाति के विरोध के अन्त की चर्चा है। प्रत्येक पाठक इन आयतों का यही अर्थ लेने पर बाध्य है ,बशर्ते कि वह परमात्मा की उस नीति से सुपरिचत हो जिसका प्रदर्शन परमात्मा उस निर्णायक क्षण करता है जब उसे अपने पैग़म्बरों को दुश्मनों के आक्रमण से बचाना अभीष्ट हो। यह भी अनिवार्य है कि उसका मनमस्तिष्क उन तमाम बेबुनियाद कथनों से एकदम रिक्त हो जिन की प्रमाणिकता का कुर्आन शरीफ़ में लेशमात्र भी सबूत नहीं। फिर यह बात भी मेरी समझ से बाहर है कि हज़रत ईसा^अ.स.^को दुश्मन यहूदियों के बीच से उठा कर आसमान पर ले जाना किस तरह مكر ***मकर*** यानि ***सूक्ष्म–योजना या उत्तम योजना*** हो सकती है ? जबकि इसको विफल करना यहूदियों के बस में न था , अकेल यहूदियों के बस में ही क्यों किसी भी इन्सान के बस में नहीं हो सकता था। एक योजना को दूसरी योजना का प्रतिकारक उसी वकत कहा जाये गा जब वे दोनों एक जैसी हों ,यह नहीं कि उन में की एक प्रकृति के साधारण नियमों से बिल्कुल ही हटी हुई हो। ठीक् ऐसी ही आयत हमारे पैग़म्बरश्री मुहम्मद^सल्ल^ के बारे मैं आई है

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ

وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ ٱللَّهُ وَٱللَّهُ خَيْرُ ٱلْمَـٰكِرِينَ ﴿٣٠﴾

"जब वे ,जिन्हों ने इन्कार किया , तेरे बारे में कुयोजनाएं बनाने लगे कि तुझे कैद कर लें या तुझे कतल कर दें या तुझे निष्कासित कर दें : उन्हों ने कुयोजनाएं बनाईं इधर अल्लाह ने भी योजना बनाई थी — और अल्लाह योजना बनाने वालों में सर्वोत्तम है।" (कुर्आन 8 : 30)

सारी बहस का सारांश

इस सारी बहस का सारांश यह हुआ :

1. कुर्आन व हदीस में ऐसी कोई सनद या प्रमाण मौजूद नहीं कि जिस के आधार पर यह मान्यता रखी जा सके कि हज़रत ईसा[अ.स]को जिन्दा आसमान पर उठाया गया ,जहाँ वे अब तक जीवित हैं ,और वहाँ से आख़री ज़माना में उतरें गे।

2. हज़रत ईसा[अ.स]संबंधी जितनी भी आयतें कुर्आन शरीफ़ में वर्णित हैं उन से यही ज्ञात होता है कि अल्लाह ने हज़रत ईसा[अ.स]को यही वचन दिया था कि वह उन्हें उनके स्वाभाविक जीवनकाल के अन्त पर मौत दे गा और उनके दर्जे बुलन्द करे गा और उन्हें काफिरों की कुयोजनाओं से सुरक्षित रखे गा। अल्लाह का यह वादा निश्चय ही पूरा होगया। हज़रत ईसा[अ.स]के दुश्मन न तो उनका वध कर सके और न ही उन्हें सलीब पर मार सके ,बल्कि अल्लाह ने उनका जीवनकाल पूर्ण कर उन्हें मृत्यु दी और फिर अपने यहाँ प्रतिष्ठत किया।

3. जो व्यक्ति हज़रत ईसा[अ.स]के सशरीर आसमान वर उठाए जाने ,वहाँ अबतक जीवित होने और आखरी ज़माना में आसमान से उतरने से इन्कार करता है ,वह वास्तव में किसी ऐसी बात का इन्कार नहीं करता जिसको विश्वसनीय या क़तई तौर पर प्रमाणित कहा जा सके। अतः ऐसे व्यक्ति को इस्लाम या ईमान के दायरे के बाहर करार देना कैसे जाइज़ हो सकता है। उस पर مرتد मुर्तद (धर्मत्यागी) होने का हुक्म लगाना किसी भी तरह सही नहीं। वह पक्का मुअमिन व मुसलमान है। जब वह मरे तो मुसलमानों की तरह उसका जिनाज़ह पढ़ना चाहिए और उसे मुसलमानों के कबरिस्तान में दफ़न करना चाहिए। अल्लाह के

निकट उसके ईमान में कोई दोष नहीं। और अल्लाह अपने बन्दों के हालात से पूर्णतया अवगत है।

अब रहा प्रश्न का दूसरा भाग (वह यह कि मान लो कि हज़रत ईसा[अस] दूबारा धरती पर लौट आते हैं ,तो उस वक्त उनके इन्कार करने वाले को क्या समझा जाये गा) ,हमारे ऊपर के विवेचन के बाद ऐसी नौबत ही नहीं आती। और अल्लाह ही सर्वज्ञा है ! इति।

कुछ अन्य श्रेष्ठ मुस्लिम विद्वानों के मत

1. स्वर्ग. मौलाना अबुल्कलाम आज़ाद[र.अ.]

6 अप्रैल ,1956 ई.

"आज(6 अप्रैल ,1956 ई.)बलोचिस्तान से डॉ. इनआम उल्लाह ख़ाँ सालारी पेंशनर ने मौलाना आज़ाद को लिखा कि ये मिर्ज़ाई लोग आप के साथ विभिन्न बातें जोड़ते रहते हैं , कभी कहते हैं कि मौलाना आज़ाद *वफ़ात–ए–मसीह* (हज़रत ईसा[अ.स]की मृत्यु) के कायल हैं... ....जवाब में मौलाना आज़ाद ने लिखा कि "*वफ़ात–ए–मसीह* का उल्लेख स्वयं क़ुर्आन शरीफ़ में मौजूद है।"

("मौलाना आज़ाद––एक सियासी डायरी" ,संकलनकर्ता असर बिन अहया अन्सारी , दिल्ली , पृ. 543–44)

"हज़रत ईसा[अ.स]के जीवित होने की धारणा मूलतः प्रत्येक दृष्टि से एक शुद्ध ईसाई धारणा है जो इस्लामी लिबास और रूप में प्रकट हुई है।"

(नक़्शे आज़ाद , संकलनकर्ता मौलाना गुलाम रसूल महर[र.अ.], प्रकाशक किताब मंज़िल लाहौर)

2. स्वर्ग. मौलाना शिब्ली नौमानी[अ.र.]

उनका सन् 1905 ई. का एक इंटरव्यु उनके जीवन काल में ही छपा

था , जिस में भेंटकर्ता के प्रश्नों का उत्तद देते हुए मौलाना शिब्ली ने साफ़ साफ़ कहा था :

"**प्रश्न** : आपका हज़रत ईसा[अ.स]के जीवित होने के बारे में क्या विचार है ?

उत्तर : वो मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। इसका सबूत कुर्आन शरीफ़ की *"फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी"* (5 : 117) वाली आयत है। क्योंकि इस में हज़रत ईसा[अ.स]कहते हैं ,कि *(हे अल्लाह !) जब तू ने मुझे मृत्यु दे दी तो तू ही उनका (अर्थात् मेरे अनुयायिओं का) निगरां था।* अब यदि हम उन्हें ज़िन्दा मानें तो इसका अनिवार्य तात्पर्य यही होगा कि वो अब भी अपने अनुयायिओं की निगरानी कर रहे हैं ,जबकि वे इस बात का इनकार करते हैं। फल यह कि कुर्आन शरीफ़ में तो यही लिखा है कि हज़रत ईसा[अ.स]मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।

प्रश्न : मुसलमान उलमा (विद्वान) तो इस समय भी कहते हैं कि हज़रत ईसा[अ.स](सशरीर) ज़िन्दा हैं ?

उत्तर : वे मूर्ख हैं ज्ञानवान् नहीं।

प्रश्न : पूर्ववर्ती मुसलमानों में के अधिकांश उलमा भी तो हज़रत ईसा[अ.स]को जीवित ही मानते रहे हैं ?

उत्तर : हाँ यह सच है , लेकिन इस में उनका कोई दोष नहीं। कुर्आन शरीफ़ एक असीम सागर है , इस में वर्णित बहुत से रहस्य आगे चल कर खुलें गे ,किन्तु इस वक्त हज़रत ईसा[अ.स]की मृत्यु का मामला तो साफ़ हो गया। अब जो (मौलवी) इनकार करता है वह जाहिल है। और ये सब झूठे हैं।"

(अख़बार "अल्–हकम" , क़ादियान , 10 मार्च 1906 ई. ,पृ. 7)

3. स्वर्ग. मौलाना सैयद सुलैमान नदवी[र.अ.]

इनके बारे में लखनऊ का मशहूर अखबार *"सिद्दक़े जदीद"* लिखता है :

"मौलाना ने कहा मेरा अपना विश्वास यह नहीं ,अतः मैं (हज़रत ईसा[अ.स]के) इस (पुनरागमन) संबंधी हदीसों को अविश्वसनीय समझता हूँ। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी ने अपने इस मत को मौलाना अहतिशामुल्हक़

साहब के सामने भी प्रकट किया था , लेकिन साथ ही यह भी कहा था कि इस मान्यता की अभिव्यक्ति फ़ितना (उपद्रव) का कारण बने गी इस लिये मोन रहता हूँ , इस लिये भी कि यह मान्यता इस्लाम का अनिवार्य अंग नहीं।"

(अखबार *"सिके जदीद"* ,28 अक्तूबर 1955 ई.)

4. स्वर्ग. ख़्वाजा हसन निज़ामी दहलवी[र.अ.]

"बाज़ लोग कहते हैं कि हज़रत ईसा[अ.स]चौथे आसमान पर ज़िन्दा मौजूद हैं , कुर्आन शरीफ़ से यह साबित होता है कि हज़रत ईसा[अ.स] को कतल नहीं किया गया और न सलीब दी गई , किन्तु यह साबित नहीं होता कि वे ज़िन्दा आसमान पर उठा लिये गए और अब तक ज़िन्दा हैं। बल्कि कुर्आन शरीफ़ में यह है कि *"हे ईसा ! हम तुम को मृत्यु दें गे फिर अपने यहां तुम्हारा दरजा बुलन्द करें गे या अपने पास उठा लें गे* "लेकिन पहले वफ़ात (मृत्यु) का शब्द है जिसके माना मृत्यु हैं।"

(अख़बार "मुनादी" दहली , 18 सितंबर 1936 ई. ,पृ. 16)

5. स्वर्ग. मौलाना मुहम्मद उसमान फ़ारक़लीत[र.अ.]

(प्रधान संपादक अख़बार *"अल्–जमीअत"* दहली) ,

"यदि हज़रत ईसा[अ.स]का पुनरागमन इस्लाम के मौलिक सिद्धांतों में सम्मिलित होता , और इस को मुक्ति का आधार करार दिया जाता , तो निश्चय ही कुर्आन शरीफ़ इस मान्यता की चर्चा सविस्तार करता। क्योंकि कुर्आन शरीफ़ का दावा है कि मानवीय मार्गदर्शन की समस्त बातें इस में आ गयी हैं — *इन्न अलैना ललहुदा (हिदायत का मार्ग बताना हमारा काम है)* — लेकिन कुर्आन शरीफ़ में हज़रत ईसा[अ.स]के पुनरागमन का कहीं कोई उल्लेख नहीं। अतएव यह समझना सही होगा कि किसी पैग़म्बर का पुनरागमन ,और वह भी (हमारे) *ख़ातमल्–मुर्सलीन*[सल्ल](=अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद[सल्ल]) के बाद , सर्वथा कुर्आन विरुद्ध है।"

(उर्दू डाइजेस्ट *"शबिस्तान"* , नई दहली , नवम्बर 1974 ई. ,पृ. 18)

6. स्वर्ग. अल्लामा सर मुहम्मद इक़बाल[र.अ.]

" मैं ज़यादा से ज़यादा आपको सिर्फ अपना अक़ीदा (=विश्वास) बता सकता हूँ और बस। मेरे निकट *महदी ,मसीहा* या *मुजद्दिद* के आगमन संबंधी हदीसें ईरानी और *अजमी* (= *ग़ैर–अरबी*) विचार–धारा का परिणाम हैं। अरबी विचार–धारा या कुर्आन की सही स्पिरिट से इन का कोई संबंध नहीं।"

(इक़बाल नामा , भाग 2, पत्र बनाम चौदहरी मुहम्मद अहसन साहिब , पृ. 231)

7. स्वर्ग. मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ[र.अ.]

(संपादक अख़बार "ज़मीनदार" लाहौर)

"हज़रत ईसा[अ.स.] के जीवत होने की मान्यता कोई इस्लामी मान्यता नहीं है ,बहुत से मुसलमानों ने इस का इनकार किया है।"

(अख़बार "मुजाहिद" लाहौर , 12 स्तम्बर 1935 ई.)

8. मुस्लिम वर्लड लीग मक्का **(Muslim World League Mecca)**

मुसलमानों की इस विश्व–संस्था ने 1964 ई. में कुर्आन शरीफ़ का एक अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया जिस में साफ लिखा है :

"Nowhere in the Qu'ran is there any warrant for the popular belief of many Muslims that God has "taken up" Jesus bodily into heaven."

(*The Message of the Qu'ran*, translated and explained by Muhammad Asad, Vol. I , footnote 172 , page 177, Muslim World League Mecca, 1964)

अर्थात् , "अधिकांश मुसलमानों की यह आम धारणा कि अल्लाह ने हज़रत ईसा[अ.स.] को सशरीर *आसमान पर उठा लिया* — इस मान्यता की कुर्आन शरीफ़ में कतअन कोई सनद मौजूद नहीं।"

9. स्वर्ग. मिर्ज़ा अबुल्फ़ज़ल

आप भारत के एक बहुत बडे विद्वान थे। इन्हों ने इस्लाम पर अंग्रजी और उर्दू में बहुत सारी किताबें लिखी हैं। इन का कुर्आन शरीफ़ का अंग्रेज़ी अनुवाद खासा अच्छा है। इस अनुवाद के अन्त पर कुर्आन के कुछ ज़रूरी शब्दों की व्याख्या Glossary के रूप में है , *'मसीह'* शब्द के नीचे यह व्याख्या मिलती है :

"Messiah,The great traveller,as Jesus was.Born in Palestine where he lived upto the age of 12,after which the Gospel records know him not, as he was travelling in North India where he had come with the Buddhist pilgrims from the West.Here he travelled to all the Buddhist pilgramages right down to Jagannath Puri in the Bay of Bengal;living mostly with the Buddhists for 18 years after which he returned to his native town in Palestine where he was baptized by John.After this he spent about three years when he was persecuted and subjected to every ignominy short of death,escaping only narrowly by a flight to the North-West of India [S. 23. 50] where he is reported by Muhammad to have lived to the ripe old age of 125."

(**The Koran**, Abu'l-Fazal,Reform Society Bombay,1955)

"अर्थात् *मसीह* ,शब्द का मौलिक अर्थ है *महा यात्री* ,जो हज़रत ईसा[अस.] थे। फ़लस्तीन में जन्मे ,और वहां 12 वर्ष तक रहे। उसके बाद बाइबिल उनके बारे में बिल्कुल मोन है ,वह इस लिये कि वह उत्तर भारत में थे। जहां वह बौद्ध तीर्थयात्रियों के संग पश्चिम से आये थे। वहां उन्हों ने समस्त बौद्ध तीर्थस्थलों की यात्र की और बंगाल खाड़ी में जगननाथ पुरी तक जा पहुंचे। इस प्रकार आप ने 18 साल बौद्धों के मध्य बिता दिये। तत्पश्चात् आप फ़लस्तीन वापस लौट आये और यूहन्ना बपतिस्मादाता से बपतिस्मा लिया। इस के बाद आप वहां तीन साल के करीब ठहरे। उन्हें फ़लस्तीन में बहुत सताया गया ,आप को हर तरह की निन्दा सहना पड़ी। आप मुश्किल से जान बचा कर उत्तर–पश्चिमी भारत भाग आये (देखो कुर्आन 23 : 50)। जहां उन्हों

ने हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मदसल्ल.के कथनानूसार 125 साल तक का जीवन काल पूर्ण किया।"

10. अल्लामा अहमद अजूज़

बेरूत के सुप्रसिद्ध विद्वान जो लबनान में समस्त धार्मिक पाठशालाओं के नियंत्रक और लबनान के मुफ़्ती के सहायक थे , अपने एक पत्र में लिखते हैं :

"निस्संदेह हज़रत ईसाअ.स. अल्लाह के कथन —*इन्नी मुतवफ़्फ़ीक* (कुर्आन 3 : 54)—के अनुसार मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। *मुतवफ़्फ़ीक* का अर्थ है *"तुझ को मौत दूँ गा"*। मृत्यु निश्चय ही एक ऐसी वास्तविकता है जो घट के रहती है। इसी लिये अल्लाह ने हज़रत ईसाअ.स.की जुबान से कहलवाया है—*"मुझ पर शांति है जिस दिन में पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूँ गा"* (कुर्आन 19 : 33)।"

(क्या हज़रत मसीहअ.स.ज़िन्दा हैं ? ,संकलनकर्ता मौलवी मुहम्मद इब्राहीम, , 1967 ई. ,पृ. 67)

■"हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्ल.ने फ़रमाया कि मुझे जब्राईल फ़रिश्ते ने आ कर यह सूचना दी कि मरयम के पुत्र ईसाअ.स.एक सौ बीस बर्ष तक जीवित रहे।"

(हुजजुल्लकिरामा , पृ. 428 , व कंजुल्‌अुमाल जिल्द 6 पृ. 160)

■"हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्ल.ने फ़रमाया कि यदि मूसाअ.स. और ईसाअ.स. ज़िन्दा होते तो उन्हें मेरे अनुसरण के सिवा चारा न था।"

(तफ़सीर इबन कसीर ,आयत 3 : 81 के अंतर्गत)

■"हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्ल.ने फ़रमाया कि यदि ईसाअ.स.ज़िन्दा होते तो उन्हें मेरे अनुसरण के सिवा चारा न था।"

(शर्हि फ़िक़ह अक्बर ,मिस्री , पृ 99)

(Batmaloo,Srinagar, Idd-ul-Azha,Friday, March 17, 2000)

٢ — وفى سورة النساء قوله تعالى : « وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ، وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ ، مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِيناً ، بَلْ رَفَعَهُ اللهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللهُ عَزِيزاً حَكِيماً »[1]

٣ — وفى سورة المائدة قوله تعالى : « وَإِذْ قَالَ اللهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ اللهِ قَالَ : سُبْحَانَكَ ، مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ، إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ . مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ : أَنِ اعْبُدُوا اللهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيداً مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ »[2].

هذه هى الآيات التى عرض القرآن فيها لنهاية شأن عيسى مع قومه .

والآية الأخيرة (آية المائدة) تذكر لنا شأناً أخروياً يتعلق بعبادة قومه له ولأمه فى الدنيا وقد سأله الله عنها . وهى تقرر على لسان عيسى عليه السلام أنه لم يقل إلا ما أمره الله به : (اعْبُدُوا اللهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ) وأنه كان شهيداً عليهم مدة إقامته بينهم ، وأنه لا يعلم ما حدث منهم بعد أن (توفاه الله)

معنى التوفى :

وكلمة (توفى) قد وردت فى القرآن كثيراً بمعنى الموت حتى صار هذا المعنى هو الغالب عليها المتبادر منها ، ولم تستعمل فى غير هذا المعنى إلا وبجانبها

(١) الآيتان ١٥٧ ، ١٥٨ . (٢) الآيتان ١١٦ ، ١١٧ .

رفع عيسى

ورد إلى مشيخة الأزهر الجليلة من حضرة عبد الكريم خان بالقيادة العامة لجيوش الشرق الأوسط سؤال جاء فيه :

هل (عيسى) حى أو ميت فى نظر القرآن الكريم والسنة المطهرة ؟ وما حكم المسلم الذى ينكر أنه حى ؟ وما حكم من لا يؤمن به إذا فرض أنه عاد إلى الدنيا مرة أخرى ؟ .

وقد حول هذا السؤال إلينا فأجبنا بالفتوى التالية التى نشرتها مجلة الرسالة فى سنتها العاشرة بالعدد ٤٦٢ .

* * *

القرآن الكريم ونهاية عيسى :

أما بعد ، فإن القرآن الكريم قد عرض لعيسى عليه السلام فيما يتصل بنهاية شأنه مع قومه فى ثلاث سور :

١ — فى سورة آل عمران قوله تعالى : « فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ . رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ . وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ، إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ، ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ »(١)

---

(١) الآيات من ٥٢ — ٥٥ من سورة آل عمران .

ما يصرفها عن هذا المعنى المتبادر : « قُلْ يَتَوَفَّاكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ »(١) ، « إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ »(٢) ، « وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ »(٣) ، « تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا »(٤). « وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى »(٥). « حَتَّى يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ »(٦). « تَوَفَّنِي مُسْلِماً وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ »(٧) . »

ومن حق كلة « توفيتنى » فى الآية أن تحمل هذا المعنى المتبادر وهو الإماتة العادية التى يعرفها الناس ويدركها من اللفظ والسياق الناطقون بالضاد . وإذن فالآية لو لم يتصل بها غيرها فى تقرير نهاية عيسى مع قومه لما كان هناك مبرر للقول بأن عيسى حى لم يمت .

ولا سبيل إلى القول بأن الوفاة هنا مراد بها وفاة عيسى بعد نزوله من السماء بناء على زعم من يرى أنه حى فى السماء ، وأنه سينزل منها آخر الزمان ، لأن الآية ظاهرة فى تحديد علاقته بقومه هو لا بالقوم الذين يكونون آخر الزمان وهم قوم محمد باتفاق لا قوم عيسى .

معنى « رفعه الله إليه » : وهل هو إلى السماء ؟

أما آية النساء فإنها تقول « بل رفعه الله إليه » وقد فسرها بعض المفسرين بل جمهورهم بالرفع إلى السماء ، ويقولون : إن الله ألقى شبهه على غيره ، ورفعه بجسده إلى السماء ، فهو حى فيها وسينزل منها آخر الزمان ، فيقتل الخنزير ويكسر الصليب ، ويعتمدون فى ذلك :

أولا : على روايات تفيد نزول عيسى بعد الدجال ، وهى روايات مضطربة مختلفة فى ألفاظها ومعانيها اختلافاً لا مجال معه للجمع بينها ، وقد نص على ذلك

---

(١) الآية ١١ من سورة السجدة .
(٢) الآية ٩٧ من سورة النساء .
(٣) الآية ٥٠ من سورة الأنفال .
(٤) الآية ٦١ من سورة الأنعام .
(٥) الآية ٥ من سورة الحج .
(٦) الآية ١٥ من سورة النساء .
(٧) الآية ١٠١ من سورة يوسف .

علماء الحديث . وهى فوق ذلك من رواية وهب بن منبه وكعب الأحبار وهما من أهل الكتاب الذين اعتنقوا الإسلام ؛ وقد عرفت درجتهما فى الحديث عند علماء الجرح والتعديل .

ثانياً : على حديث مروى عن أبى هريرة اقتصر فيه على الإخبار بنزول عيسى ، وإذا صح هذا الحديث فهو حديث آحاد . وقد أجمع العلماء على أن أحاديث الآحاد لا تفيد عقيدة ولا يصح الاعتماد عليها فى شأن المغيبات .

ثالثاً : على ما جاء فى حديث المعراج من أن محمداً ــ صلى الله عليه وسلم ــ حينما صعد إلى السماء ، وأخذ يستفتحها واحدة بعد واحدة فتفتح له ويدخل ، رأى عيسى عليه السلام هو وابن خالته يحيى فى السماء الثانية . ويكفينا فى توهين هذا المستند ما قرره كثير من شراح الحديث فى شأن المعراج وفى شأن اجتماع محمد صلى الله عليه وسلم بالأنبياء ، وأنه كان اجتماعا روحياً لا جسمانياً « انظر فتح البارى وزاد المعاد وغيرهما » .

ومن الطريف أنهم يستدلون على أن معنى الرفع فى الآية هو رفع عيسى بجسده إلى السماء بحديث المعراج ، بينما نرى فريقا منهم يستدل على أن اجتماع محمد بعيسى فى المعراج كان اجتماعا جسدياً بقوله تعالى : « بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ » وهكذا يتخذون الآية دليلا على ما يفهمونه من الحديث حين يكونون فى تفسير الحديث ، ويتخذون الحديث دليلا على ما يفهمونه من الآية حين يكونون فى تفسير الآية .

الرفع فى آية آل عمران :

ونحن إذا رجعنا إلى قوله تعالى : « إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ » فى آيات آل عمران مع قوله « بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ » فى آيات النساء وجدنا

الثانية إخباراً عن تحقيق الوعد الذى تضمنته الأولى ؛ وقد كان هذا الوعد بالتوفية والرفع والتطهير من الذين كفروا ، فإذا كانت الآية الثانية قد جاءت خالية من التوفية والتطهير ، واقتصرت على ذكر الرفع إلى الله فإنه يجب أن يلاحظ فيها ما ذكر فى الأولى جمعاً بين الآيتين .

والمعنى أن الله توفى عيسى ورفعه إليه وطهره من الذين كفروا .

وقد فسر الألوسى قوله تعالى « إِنِّي مُتَوَفِّيكَ » بوجوه منها — وهو أظهرها — إنى مستوفى أجلك ومميتك حتف أنفك لا أسلط عليك من يقتلك ؛ وهو كناية عن عصمته من الأعداء وما هم بصدده من الفتك به عليه السلام ؛ لأنه يلزم من استيفاء الله أجله وموته حتف أنفه ذلك .

وظاهر أن الرفع — الذى يكون بعد التوفية — هو رفع المكانة لا رفع الجسد ، خصوصاً وقد جاء بجانبه قوله : « وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا » مما يدل على أن الأمر أمر تشريف وتكريم .

وقد جاء الرفع فى القرآن كثيراً بهذا المعنى : « فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ » . « نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ نَشَاءُ » . « وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ » . « وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا » . « يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا » . . . إلخ

وإذن فالتعبير بقوله « وَرَافِعُكَ إِلَيَّ » وقوله « بل رفعه الله إليه » كالتعبير فى قولهم لحق فلان بالرفيق الأعلى وفى « إن الله معنا » وفى « عند مليك مقتدر » وكلها لا يفهم منها سوى معنى الرعاية والحفظ والدخول فى الكنف المقدس . فمن أين تؤخذ كلمة السماء من كلمة « إليه » اللهم إن هذا لظلم للتعبير القرآنى الواضح خضوعا لقصص وروايات لم يقم على الظن بها — فضلا عن اليقين — برهان ولا شبه برهان !

الفهم المتبادر من الآيات :

وبعد . فما عيسى إلا رسول قد خلت من قبله الرسل ، ناصبه قومه العداء ، وظهرت على وجوههم بوادر الشر بالنسبة إليه ، فالتجأ إلى الله — شأن الأنبياء والمرسلين — فأنقذه الله بعزته وحكمته وخيب مكر أعدائه . وهذا هو ما تضمنته الآيات « فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ » إلى آخرها ، بين الله فيها قوة مكره بالنسبة إلى مكرهم ، وأن مكرهم فى اغتيال عيسى قد ضاع أمام مكر الله فى حفظه وعصمته إذ قال « يَا عِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا » فهو يبشره بإنجائه من مكرهم ورد كيدهم فى نحورهم ، وأنه سيستوفى أجله حتى يموت حتف أنفه من غير قتل ولا صلب ، ثم يرفعه الله إليه .

وهذا هو ما يفهمه القارىء للآيات الواردة فى شأن نهاية عيسى مع قومه متى وقف على سنة الله مع أنبيائه حين يتألب عليهم خصومهم ، ومتى خلا ذهنه من تلك الروايات التى لا ينبغى أن تحكم فى القرآن ، ولست أدرى كيف يكون إنقاذ عيسى بطريق انتزاعه من بينهم ، ورفعه بجسده إلى السماء مكراً ؟ وكيف يوصف بأنه خير من مكرهم مع أنه شىء ليس فى استطاعتهم أن يقاوموه ، شىء ليس فى قدرة البشر ؟

ألا إنه لا يتحقق مكر فى مقابلة مكر إلا إذا كان جاريا على أسلوبه غير خارج عن مقتضى العادة فيه . وقد جاء مثل هذا فى شأن محمد صلى الله عليه وسلم « وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ »

رفع عيسى ليس عقيدة يكفر منكرها :

والخلاصة من هذا البحث :

١ — أنه ليس فى القرآن الكريم ، ولا فى السنة المطهرة مستند يصلح لتكوين عقيدة يطمئن إليها القلب بأن عيسى رفع بجسمه إلى السماء وأنه حى إلى الآن فيها وأنه سينزل منها آخر الزمان إلى الأرض .

٢ — أن كل ما تفيده الآيات الواردة فى هذا الشأن هو وعد الله عيسى بأنه متوفيه أجله ورافعه إليه وعاصمه من الذين كفروا ، وأن هذا الوعد قد تحقق فلم يقتله أعداؤه ولم يصلبوه ، ولكن وفاه الله أجله ورفعه إليه .

٣ — أن من أنكر أن عيسى قد رفع بجسمه إلى السماء ، وأنه فيها حى إلى الآن ، وأنه سينزل منها آخر الزمان ؛ فإنه لا يكون بذلك منكرا لما ثبت بدليل قطعى ، فلا يخرج عن إسلامه وإيمانه ، ولا ينبغى أن يحكم عليه بالردة ، بل هو مسلم مؤمن ، إذا مات فهو من المؤمنين ، يصلى عليه كما يصلى على المؤمنين ، ويدفن فى مقابر المؤمنين ، ولا شبة فى إيمانه عند الله ، والله بعباده خبير بصير .